

पवनकान्त झा (काश्यप कमल)

बाबूक सुनाएल खिस्सा

सहस्त्रमुखक दीप



एक टा राजा छलाह। ओ अपन प्रजाक बड नीक जेकाँ ध्यान रखैत छलाह। राजा साहेब रोज राति कऽ भेष बदलि कऽ अपन राज्यमे घुमैत छलाह।

एक राति राजा घुमैत छलाह तँ देखलखिन जे एकटा गरीब आदमी घूर तपैत रहै, तखने ओकर पत्नी आबि कऽ कहलकै.. चलू भोजन कऽ लिअ।

पति पुछलकै- पैंचा लगेलौं?

पत्नी कहलखिन- हँ।

पति पुछलकै- पैंचा सधेलौं?

पत्नी कहलखिन- हँ।

पति कहलकै- तँ चलू, सहस्त्रमुखक दीप जराउ गऽ, हम अबैत छी।

पत्नी चलि गेलीह।

राजा नुका कऽ सभटा गप्प सुनैत रहथि। राजा सोचलन्हि जे ई गरीब आदमी पैंचा लगबैतो अछि, पैंचा सधैबतो अछि आ सहस्त्रमुखक दीप बारि कऽ खाइत अछि। हम राजा छी से एक-दू नै तँ पाँच मुखक दीप जरबैत छी आ ई सहस्त्रमुखक दीप जरबैत अछि आ ई सभ दिन पैंचा लगबैत-सधबैत अछि। एकरा एतेक धन कतएसँ अबैत छैक? अवश्य ई कतौ चोरि करैत हएत। एकरा सजा भेटबाक चाही।

भोरे राजा दरबारमे ओइ आदमीकेँ बजेलन्हि।

दरबारमे राजा ओकरा पुछलखिन्ह- तोँ कोन काज करैत छेँ?

ओ कहलकन्हि- महाराज, हम मजदूरी करैत छी।

राजा बजलाह- तोँ झूठ बजैत छेँ।

ओ कहलकन्हि- नै महाराज, हम झूठ नै बजैत छी।

राजा तमसा कऽ पुछलखिन्ह- तहन तोरा रोज कतऽ सँ पैंचा लगबैत आ सधबैत छेँ? सहस्त्रमुखक दीप बारि कऽ भोजन कतए सँ करैत छेँ?

ओ मजदूर विनती कऽ कऽ पुछलकन्हि तँ राजा रातुक सभ वृत्तान्त कहलथिन्ह।

ओ मजदूर हँसए लागल आ बाजल- महाराज, हम सभ मजदूरी कऽ कऽ गुजर करैत छी तैयो अपन संस्कारसँ हटि नै सकलौं। राति जे हम अपन पत्नीसँ कहलिऐ से पैंचा लगेबाक अर्थ भेलै जे हमर दू टा छोट धिया-पूता अछि तकरा भोजन करेनाइ आ पैंचा सधेबाक माने भेलै जे बूढ़ माए-बापकेँ भोजन करेनाइ। हमर घरवाली जखन कहलक हँ, तकर बाद हम कहलिऐ सहस्त्रमुखक दीप जरबै लेल। सरकार, हमरा सभकेँ लालटेम-डिबिया कतएसँ एतै? हम सभ तँ एक मुट्ठी पुआर जरा कऽ ओकरे इजोतमे खा लैत छी। हमरा सभ लेल वएह सहस्त्रमुखक दीप भेलै।

सभ दरबारी ओकर जय-जयकार केलक आ राजा ओकरा बहुते रास इनाम देलखिन्ह।

गप्पक अर्थ

एक बेर एकटा राज दरबारमे नाच होइत रहै, ताइ दिन नाच भरि रातुक होइ, ब्रह्ममुहुर्त सँ कनी पहिने नटुआकेँ औंघी लागि गेलै, ई देखि नाचमे जे मूलगैन रहै से इशारामे कहलकै- गये रे बहुतरे काले संजनम मन रंजनम... आ नटुआ गाबए लागल।



ई सुनि राजकुमार अपन गलाक हार नटुआकेँ इनाममे दऽ देलकै। राजकुमारी अपन गिरमोहार (गिरमलहार) नटुआकेँ इनाममे दऽ देलकै। सभकेँ आश्चर्य भेलै।

जहन पुछल गेलै तँ राजकुमार कहलकै- हमर बाबू (राजा) ८० बरखक बूढ़ भऽ गेलाह तैयो एखन तक हमरा राजा नै बनेलन्हि, आइ हम सोचने रही जे रातिमे तलवारसँ काटि दितियन्हि। किन्तु अइ नटुआक शब्दक अर्थ हमरा लागि गेल, संयम राखै लेल मूलगैन कहलक।

तकर बाद राजकुमारीसँ पुछल गेल तँ ओ कहलथि- हमरा मंत्रीक बेटासँ प्रेम अछि परंतु हमर बाबू (राजा) हमर विवाहक विरुद्ध छथि आ आइ हम दुनू गोटा भागि जैतौं मुदा ई नटुआ हमरा कहलक से हमरा अर्थ लागि गेल, संयम राखै लेल मूलगैन कहलक।

तँ किछु लोक केँ गप्पक अर्थ आ लक्ष्मीनाथ गोसाँइक पाँतिक जँ अर्थ बुझाए, से ने मनुख..

जहियासँ काल धेलक



एक टा जोतखी जी रहथि। प्रकाण्ड विद्वान। विद्वतामे समस्त राज्यमे हुनकर धाख छलन्हि।

भादव मास, सन्ध्या काल। जोतखी जी लोटा लऽ कऽ पैखाना दिस विदा भेलाह। बुनछेक भेल रहै परंच मेघ लागल रहै। गामक बाहर रस्ता कातमे मिरचैया गाछक झाँखुर लग धोती खोलि बैसि गेलाह। जहाँ बैसला कि बोनमे नुकाएल साँप पाछूमे काटि लेलकन्हि।

जोतखी जी धरफराएल गामक कन्हा भगता लग गेलाह। ताइ दिन तँ गामक भगता सभ बेसी मुर्खे होइत छल। भगता झाड़ए लगलन्हि आ कहन्हि- केहेन बेकूफ छी, कुठाममे साँप काटि लेलक।

जोतखी जी चुप रहला।

भगता फेर हँसैत कहलकन्हि- धुर जोतखी जी, केहेन बेवकूफ छी।

जोतखी जी फेर चुप।

तेसर बेर भगता फेर कहलकन्हि- “ ”।

अइ बेर जोतखी जीकेँ नै रहल गेलन्हि, कहलखिन्ह- हमरा सन विद्वान अइ राजमे नै छौ। परंच जहनसँ ई काल धऽ लेलकए तहनसँ ठीके हम बेवकूफ भऽ गेलौं।

कहैत जोतखी जी विदा भऽ गेलाह।

नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?

एक टा पण्डितजी रहथि, ओइ राज्यक राज कुमारकेँ शिक्षा देनाइ सेहो हुनके काज रहन्हि। पण्डितजी अपन बेटाकेँ सिखबथिन्ह जे *नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।*

जहन पण्डितजी बूढ़ भऽ कऽ मरि गेलाह तँ हुनकर बेटा राज पण्डित भेलाह। ओइ राजाकेँ बुढ़ारीमे एकटा बेटा भेलन्हि। राजकुमार जहन ५-६ बरखक भेलाह तँ पण्डितजीसँ शिक्षा ग्रहण करए लगलाह।



एक दिन पण्डितजीकेँ बुझेलन्हि जे बाबू सभ दिन कहैत छलाह *नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।* से एकरा भजेबाक चाही .... एक दिन ओ एकटा बड़का टा सन्दूक लेलन्हि, ओइमे खेबा-पिबाक व्यवस्था कऽ देलखिन्ह आ राजा बेटाकेँ कहलखिन्ह जे अहाँ अइ सन्दूकमे बन्द भऽ जाउ आ कतबो कियो सोर पाड़ए तँ नै बाजब। जाबे हम नै कही तावत नै निकलब।

पण्डितजी बाहर एलाह आ एकटा चक्कू लेलन्हि आ चक्कूक संग अपन हाथमे लाल रंग लगा लेलन्हि आ हड़बड़ाइत पंडिताइनकेँ कहलथिन्ह जे हमरा बुते जुलूम भऽ गेलै, चक्कूसँ *करची कलम* बनबैत काल उछट्टि कऽ राजकुमारक नरेटी कटा गेलै। ई सुनि पंडिताइन छाती पीटऽ लगली। हरेलन्हि ने फुरेलन्हि पंडिताइन अपन पड़ोसिया चौकीदारक कनियाँ, जिनकासँ पंडिताइनकेँ बड़ अपेछितारे छलन्हि, दौड़ कऽ कहऽ गेलखिन्ह। चौकीदारनी दौड़ कऽ खेतमे हर जोतैत चौकीदारकेँ कहलकै। चौकीदार ने यएह सोचलक ने वएह, सोझे आबि पंडितजीक डांड़मे रस्सा लगेलक आ राजदरबारमे लऽ गेल। चौकीदारकेँ भेलै जे अइ माथे प्रोमोशन भऽ जाएत।

राजदरबारमे सभ आश्चर्यचकित भऽ गेल? राजा कहलखिन्ह जे गुरुकेँ

रस्सामे बान्हि अनर्थ केलैं। तुरत हिनकर रस्सा खोल।

चौकीदार- महाराज, ई बड़का पैघ गलती केलन्हि।

राजा- कतबो पैघ गलतीक लेल गुरुकँ रस्सासँ बान्हल नै जा सकैत छै। जल्दी हिनका खोल।

चौकीदार खोलि देलकन्हि, तहन राजा कहलखिन्ह- आब कह जे ई की केलन्हि?

चौकीदार बाजल जे ई राजकुमारक हत्या कऽ देलन्हि। सभ सन्न। सभ दरबारीमे खुसुर-फुसुर होमए लागल। कियो कहै जे हिनका शूलीपर चढ़ा दे तँ कियो कहै जे भकसी झोंका दियन्हु। राजा बड़ी काल सोचलन्हि आ अंतमे फैसला लेलन्हि आ पण्डितजी कँ कहलखिन्ह- हमरा जीवनमे अइसँ पैघ अनर्थ नै हएत। अहाँ बड़ पैघ अपराध केलौं परंतु अहाँ गुरु छी। तथापि अहाँकँ सजा भेटत। हम अहाँकँ सजा दैत छी जे अहाँ सपरिवार चौबीस घंटाक भीतर हमर राज्यसँ निकलि जाउ।

सभा समाप्त भऽ गेल। सभ दरबारीमे खुसुर-फुसुर शुरु भऽ गेल। समुच्चा राज्यमे हाहाकार मचि गेल।

पण्डित जी गामपर एलाह आ बक्सामे सँ राजकुमारकँ निकालि आंगुर पकड़ि राजदरबार दिस बिदा भेलाह।

सभ आश्चर्यचकित भऽ गेल।

पण्डित जी राजदरबार पहुँचलाह। सभ अचम्भित।

राजा पुछलखिन्ह- की बात छिऐ पण्डित जी?

पण्डित जी बजलाह- सरकार, हमरा जनमहिसँ बाबू कहैत छलाह जे नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकँ सभ गप्प नै कहिऐ। से गप्पकँ हम भजेलौं अछि।

राजा बजला- तँ की प्राप्ति भेल?

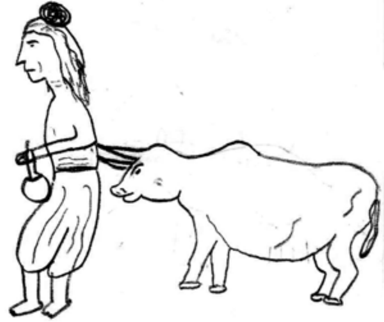
अइ राज्यमे सभसँ पैघ अहाँ आ अहाँक अइसँ पैघ अनर्थ किछु नै भऽ सकैत अछि तथापि अहाँ हमरा मर्यादानुकूल दण्ड देलौं। तँ ई तँ ठीके जे नीक करी तँ पैघ के आ बेजाए करी तँ पैघ के? दोसर अइ चौकीदारनीसँ पण्डिताइनकँ बड़ अपेक्षितारे छलन्हि आ चौकीदार सेहो हमरा बड नमस्कार पात करैत छल। समय पड़लापर ओ ई बात नै बुझऽ लागल, सोझे पकड़ि लेलक, बुझलक जे अही माथे प्रोमोशन भऽ जाएत। तँ ठीके बाबू कहैत छलाह जे छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी।

तेसर- हमर पण्डिताइन किछु सोचऽ नै लगली आ सोझे चौकीदारनीकेँ कहए गेलखिन्ह। तँ ईहो ठीक जे जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।

बाबूक सभ गप्प मील गेल। लिअ अपन बेटा आ हम चललौं।

(बौआ-बुच्ची, ई पुरान खिस्सा छै जखन शिक्षा खास कऽ स्त्री-शिक्षाक अभाव रहै। आब परिस्थिति सभ ठाम, सभ वर्गमे बदलल छै। -सम्पादक।)

पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी



एक टा आदमी छलाह। हुनका आध्यात्मिक किताब पढ़ैमे बड़ मोन लगैत रहन्हि। आस्ते-आस्ते ओ बाबाजी भऽ गेलाह। हुनका नान्हिये टा मे किताबमे पढ़ल रहन्हि जे कण-कणमे भगवान बसैत छथि आ सएह सत मानि कऽ ओ जीवन कटैत रहलाह।

एक बेर एक टा गाममे बड़ मरखाह साँढ़ आबि गेलै। भरि गाममे तेहेन ने उछन्नर देने छल जे गामक लोक ओइ साँढ़क डरे ओ रास्ता छोड़ि देने छल।

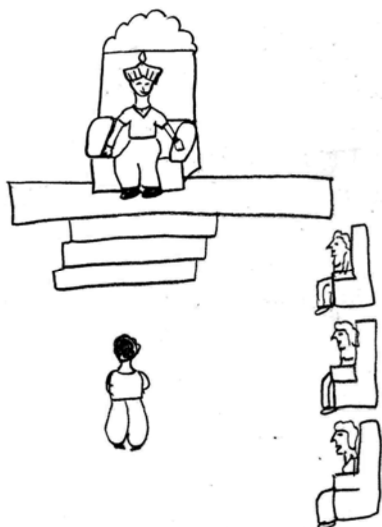
एक दिन ई महात्मा जी ओइ गाम गेलाह। भरि दिन घुमलाक बाद साँझमे जखन घुमल जाइत रहथि तँ वएह रस्ता धरऽ लगलाह। ओहू ठाम नेना भुटका सभ खेलाइत रहै। बाबाजीकेँ ओइ रस्ते जाइत देखि नेना भुटका सभ मना केलकन्हि। बाबाजी कहखिन्ह जे रे बच्चा तूँ सभ की जाने गेलेँ, कण-कणमे भगवान बास करैए, हमरामे, तोरामे, ओइ साँढ़मे, सभमे... आ जखन साँढ़मे भगवान अइ तँ भगवान हमरा कोना मारत? हम तँ ओकर भक्त छी।

नेना भुटका सभ कहलकन्हि- तहन जा तोरा भगवान बचेथुन्ह।

बाबाजी आगू बढ़लाह। साँढ़ दूरेसँ देखि नांगरि उठा दौड़ल आ बाबाजीकेँ सिंघपर उठा आरिक कात मे रगड़ऽ लागल। बाबाजी बाप-बाप करए लगलाह। जावत लोक सभ लाठी-भाला आदि लऽ कऽ दौगल तावत बाबाजी बेदम भऽ गेलाह। हुनकर मृत्यु भऽ गेल छलन्हि।

मुइलाक बाद जहन भगवानसँ भेँट भेलन्हि ओ बाबाजी भगवानसँ पुछलखिन्ह तँ भगवान जबाब देलखिन्ह- बाउ, किताबमे पढ़बे टा नै करू ओकरा गुनबो करियौ। जँ सभमे हम (भगवान) रहैत छी तँ ओ नेना भुटका सभ जे अहाँकेँ मना केलक ओकरोमे तँ हम (भगवान) छलिऐ। तँ खाली पढ़बे टा नै करियौ, ओकरा गुनबो करियौ।

अकिलक मोल



एकटा राज्यमे वृद्ध राजा छलाह। हुनकर मंत्रीमण्डलमे सभसँ बेसी दरमाहा एक टा बुरहा मंत्रीजीकेँ छलन्हि। दरबारक किछु अपेक्षाकृत युवा मंत्रीगणकेँ एकटा बात अखरैत छलन्हि जे सभटा काज हम सभ करैत छी तैयो हमरा सभक कम दरमाहा आ ई बुरहा मंत्री कोनो काज नै करैत छथि, खाली राजा साहेब लग गप्प दैत रहैत छथिन्ह, तैयो ओ सभसँ बेसी दरमाहा पबैत छथि संगहि राजा साहैब हुनकर गप्प बेसी मानबो करैत छथिन्ह। अइ बातपर सभ दरबारी सभमे घोल-फचक्का होमए लागल। एक दिन सभ मिलि कऽ भरल राजदरबारमे अइ प्रश्नकेँ उठौलक। राजा साहेब बड़ गम्भीर भऽ कहलथिन्ह जे काल्हिए हम एकर प्रमाण देब। दरबार खतम भऽ गेल।

भोर भेने दरबार लागल। राजा प्रतिवादी युवा मंत्रीकेँ आ बुरहा मंत्रीकेँ अलग अलग कमरामे बैसा देलथिन्ह। सभसँ पहिने प्रतिवादी युवा मंत्रीकेँ बजेलाह आ कहलखिन जे जाउ आ राजमहलक पछुआरमे नारक टाल छै ओइमे एकटा पिलिनियाकेँ बच्चा भेल छै, कने देखने अबियौ।

युवा मंत्री गेलाह आ कने कालमे घुमि कऽ आपस एलाह।

राजा पुछलखिन्ह- देखलिऐ?

युवा मंत्री- जी महाराज, ठीके कुक्कूरकेँ बच्चा भेल छै महाराज।

राजा- कएक टा छै?

युवा मंत्री- जा, से तँ गनबे नै केलिऐ।

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महराज, तीन टा चितकबरा, दू टा गोला आ एक टा उज्जर छै।

राजा- ओइमे कएक टा पिलिनिया आ कएक टा पिल्ला छै?

युवा मंत्री- जा से फरिछा कऽ देखबे नै केलिऐ।

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महाराज, पाँच टा पिलिनियाँ आ एक टा पिल्ला छै।

राजा- बिख लगैबला कएक टा छै आ बिना बिखबला कएक टा छै?

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महाराज, तीन टाकेँ बिख लगतै आ तीन टाकेँ बिख नै लगतै।

राजा- कएक टा पिल्लाकेँ बिख लगतै आ कएक टा पिलिनियाकेँ बिख लगतै?

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ जेबाक लेल बढ़ए लगला तँ राजा रोकि देलखिन आ कहलखिन- बैस जाउ। युवा मंत्री बैस गेलाह।

तकर बाद राजा बुरहा मंत्रीकेँ दरबारमे बजेलन्हि आ कहलखिन जे मंत्रीजी राजमहलक पछुआरमे जे नारक टाल छै ओइमे एकटा पिलिनियाँकेँ बच्चा भेल छै, कने देखने अबियौ।

बुरहा मंत्री गेलाह आ कने कालमे घुमि कऽ आपस एलाह। राजा पुछलखिन्ह- मंत्री जी देखलिऐ?

बुरहा मंत्री- जी महाराज, देखलिऐ। गोला पिलिनियाकेँ करीब पाँच-छ: दिन पहिने बच्चा भेल हेतै। तीन टा चितकबरा, दू टा गोला आ एक टा उज्जर रंगक छै। पाँच टा पिलिनियाँ आ एक टा पिल्ला छै। तीन टाकेँ बिख लगतै जइमे दू टा पिल्ला आ एक टा पिलिनियाँ आ बाँकी तीन टाकेँ बिख नै लगतै। लगैत अछि जे...

राजा बीचमे रोकि देलखिन आ दरबारी सभसँ पुछलखिन जे अहाँ आब बुझलिऐ जे बुरहा मंत्रीजी केँ सभसँ बेसी दरमाहा किए छै? आबो ककरो कोनो कोनो प्रश्न?

सभ दरबारी महाराजक जयकार कऽ उठल आ युवा मंत्रीक मुँह लटकि गेलन्हि।



ज्योति सुनीत चौधरी

ध्वनि-प्रतिध्वनि



ध्वनि आ प्रतिध्वनि नाओंक दूटा जुड़बा बहिन छली जे कि पहाड़ी इलाकामे रहै छली। ध्वनि स्वभावसँ बड्ड शान्त आ निर्मल छलथि जखन कि प्रतिध्वनि हुनकर विपरीत बहुत चञ्चल आ उपद्रवी छलथि। ध्वनि हमेशा घरमे अपन माएकेँ काजमे मददि करै छलथि। प्रतिध्वनि पहाड़ीमे एम्हर-उम्हर भागैत रहैत छलथि। एकदिन प्रतिध्वनि बाहर घुमै छली तँ हुनका एकटा राजकुमार देखेलनि। ओ राजकुमार हुनका बड्ड नीक लगलनि। प्रतिध्वनि ओइ राजकुमारसँ खूब दोस्ती केली आ ओकरा घुमाबए फिराबए लगली, कारण ओ राजकुमार ओइठाम ककरो अतिथि बनि कऽ आएल छला। राजकुमार हुनकासँ बड्ड प्रसन्न छला।

दिन बीतल आ प्रतिध्वनि ओइ राजकुमारसँ बिआहक मोन बनाबए लगली मुदा एकदिन जखन ओ घर गेली तँ देखली जे ओ राजकुमार हुनकर बहिनकेँ बिआहक प्रयोजनसँ देखए लेल आएल छलनि।

राजकुमार हुनकर बहिन ध्वनिकेँ पसन्द कए बिआह कऽ लेलाह। प्रतिध्वनिकेँ बहुत पैघ आघात पहुँचल छलनि। हुनका बहुत क्षोभ भेलनि जे लोक हुनकर दुःख नै बुझलकनि। ओ पहाड़ीसँ कूदि कऽ अपन प्राण तिआगि देली। मुदा हुनकर आत्माकेँ मुक्ति नै भेटलनि। हुनकर आत्मा पहाड़क खाधिमे अखनो भटकैत रहै छन्हि। अखनो जँ कियो पहाड़क खाधिमे किछु जोरसँ बाजैत अछि तँ प्रतिध्वनि ओइ आवाजकेँ बेर-बेर बाजै छथि।

अदृश्य बन्धन

स्वतंत्र विचारक स्वामिनी माया अपन पेशाक प्रति अत्यधिक समर्पित एक बाल्य मनोविज्ञानक विशेषज्ञा छली। ऐ विषयमे हुनका बच्चेसँ लगाव छलनि आ हुनकर अपन परिवार सेहो बड्ड आधुनिक विचारक छलनि। माता-पिताक दिससँ कहियो कुनो जोर नै छलनि, ने व्यवसायक चयन बेरमे आ ने बिआहक निर्णयमे।

ओना मायाक एक बड्ड नीक पुरुष मित्र छलखिन जे ने मात्र हुनकर, वरन हुनकर परिवारक सेहो बहुत स्नेही छलथि। मुदा ई मायाक अपन व्यवसायक प्रति अनुराग आ अपन निजी महत्वाकांक्षाक उन्माद छलनि जे ओ अपन एहेन पुरान आ घनिष्ठ मित्र द्वारा आएल बिआहक प्रस्तावकेँ अस्वीकार कऽ एकटा क्रेश -छोट बच्चा सभकेँ दिनमे देखभाल करैबला संस्था- मे नोकरी पकड़ली। विषय विशेषमे पारंगत मायाकेँ कार्यमे अपन निपुणता प्रमाणित करए मे कनियो देरी नै लगलनि। ओ अपन क्रेशक सभ बच्चाक व्यक्तिगत व्यवहारपर विशेष धियान राखै छलथि आ आवश्यक परामर्श अभिभावक सभकेँ दै छलथि। बच्चा सभक अभिभावक लग कोनो समस्या नै छल जकर उपाय हिनका लग नै छलनि। ऐ तरहेँ बहुत शीघ्र हुनका अपन कार्यक्षेत्रमे प्रसिद्धि आ प्रशंसा भेट गेलनि। आस्ते-आस्ते अपन कार्यमे अभ्यस्त भेलापर मायाकेँ अपन निजी जीवनक विषयमे सोचैक समए सेहो भेटए लगलनि।

एक मनोवैज्ञानिकक रूपमे तँ ओ अपन अस्तित्व बना लेने रहथि मुदा जखन कखनो ओ बच्चा सभसँ आन्तरिक प्रेम स्थापित करए कऽ प्रयास करै छली, हुनका आन हुअ कऽ आभास आबि जाइत छलनि। दिन भरि बच्चाक भोजनक पौष्टिकता, रहन-सहनक शुद्धता आ खेलमे मस्तिष्कक विकासक समावेशक धियान राखैमे माया कतेक श्रम करैत छथि मुदा जखन बच्चा सभकेँ ओकर अभिभावक लेबऽ आबै छल तखन बच्चा सभमे एकटा अद्भुत खुशी बुझाइत छल। अभिभावकोक कहब छल जे अपन बच्चाकेँ पाबि सभटा थकान दूर भऽ जाइत अछि। बच्चा सभक मुँहपरक ओ खुशी जे ओकरा सभमे अपन माता-पिताकेँ देखलापर आबैत छल से खुशी देबाक सेहन्ता मायामे जागि गेल रहनि। बहुत सोच विचारक बाद ओ निर्णय केली जे अपन माता-पितासँ अपन मित्रक जानकारी ली। ज्ञात भेलनि जे ओकर कुनो खोज

खबरि नै अछि। मायाकेँ विचार एलनि जे एक बच्चाकेँ गोद ली। मुदा सभ कहलकनि जे एनामे बच्चाकेँ पिताक सुख नै भेटतनि। तखन माया अपन माता-पितासँ अपन बिआह लेल एहेन वरक चएन करए कहलखिन जे एक बच्चाकेँ गोद लेबएसँ मना नै करनि; अन्यथा ओ ओहिना बच्चाकेँ गोद लेती कारण दुनियाँमे कतेको बच्चा बिना माता-पिताक सेहो रहैत अछि।

माता-पिता अपन कार्यमे लागि गेला। किछु दिन बाद 'वेलेन्टाइन्स' दिवसपर मायाक अभिभावक हुनका अपना लग बजेलखिन। माया अपन कार्यसँ कम्मे दिनक छुट्टी लऽ अपन घर गेली। ओतए हुनकर अभिभावक घरपर पार्टी रखने रहथिन जइमे हुनका एक टा बढ़िया आश्चर्यजनक उपहार भेटलनि। मायाक पुरान मित्र ओइ पार्टीमे आएल छलनि जे अखनो मायासँ बिआह लेल तैयार छलनि। अतबे नै, ओ मायाक जे विचार रहनि, अनाथ बच्चाकेँ गोद लऽ अपन बनाबक, तहूसँ सहमत छलनि। सभ बेर माया अपन माता-पिताकेँ *वेलेन्टाइन्स डे* पर किछु उपहार दैत छलखिन मुदा ऐबेर हुनका अपन माता-पितासँ अमूल्य उपहार भेटल रहनि। अपन कार्य हेतु समर्पित माया कखन गृहस्थीक अदृश्य बन्धनमे बँधि गेली से हुनको नै बुझेलनि।

नानीक खिस्सा

हम जखन चारि पाँच वर्षक रही तखनसँ मोन अछि जे ई खिस्सा नानी सुनाबै छलथि। व्याहक बाद बहुत दिन हुनकासँ भेँट नै भेल। बादमे जखन भेटली तँ हम फेर कहलियनि खिस्सा सुनाबए, तँ हुनका खूब हँसी लगलनि। कहलनि जे आब तँ बाउ हइ तूँ अपन बच्चाकेँ सुनेबहीं। हम बिसरि गेल रही मुदा नब्बेसँ बेसी वर्षक अवस्था भेलाक बादो हुनका सभटा खिस्सा मोने छलनि। हम बस कोशिश कऽ रहल छी हुनके जकाँ कहैक।

१. भलुनिया मौसी

सुखनी आ दुखनी नाओंक दू बहिन छली। नाओंक अनुरूपे सुखनीक बिआह खूब सम्पन्न घरमे भेलनि आ दुखनीक गरीब घरमे। सुखनीक स्वभाव घमण्डी आ टेढ़ छलनि आ दुखनीक बड्ड शालीन आ मृदुल। सुखनीकेँ अपन बहिनक प्रति कखनो दया नै आबै छलनि। बहिनक बच्चा सभ जखन

कखनो किछु मांगै लेल आबैत छलनि तँ ओ दुत्कारि कऽ भगा दइ छलखिन।

एक दिन दुखनी फर-फूल ताकै लेल बोन दिस चलि गेली। जाइत-जाइत एकटा घर देखेलनि। खिड़कीसँ भीतर तकली तँ एक टा दुर्गन्ध गन्हाइत भलुनियाकेँ सूतल देखलनि। ओतएसँ पड़ाइते छली आकि ओ भलुनिया देखि लेलकनि आ अपन कर्कश बोलीमे पुछलकनि "के छैं गै"।

आब सुखनी डेरा तँ खूब गेल रहथि मुदा कोनो रस्ता नै छलनि। तुरन्त हँसए लगली आ बड़ड आपकतासँ जबाब देलनि- "नै चिन्हलैं गइ मौसी, हम दुखनी। बड़ड मोन लागल छल तोरा देखै लेल।"

भलुनिया फेर कहलकनि "हम तँ ठीके नै चिन्हलियौ। एतँ की करै छलैं?"

"हम देखै छलौं तोहर घर, कतेक नीक कोठा छौ। मोन होइत अछि तोहर खूब सेवा करियौ। अतेक दिन बाद भेटलैं। कहै ने, की काज कऽ दियौ।" दुखनी जबाब देलखिन।



अतेक नीक बोलीसँ भलुनिया खुश भऽ गेल। दुखनीकेँ अपन घर घुसेलक। अन्दर खूब बड़का घर छल। एक कोठली सोना-चाँदी-हीरा-असर्फीसँ भरल छल तँ एक कोठली कपड़ा लत्ताक ढेर छल। भनसा घर तरह-तरहक पकवाऩ, फल आदिसँ भरल छल। दुखनी पूरा घर नीप कऽ साफ कऽ देलखिन। तकर बाद भलुनियाक सेवा करए लगली। तेलसँ मालिस कऽ खूब जाँति देलखिन। भलुनिया बड़ड प्रसन्न भेल आ दुखनीकेँ खूब समान पाती संगे विदा केलक।

पूरा ठेला गाड़ी सोना-असर्फी कपड़ा-लत्ता आ पूरी-पकवानसँ भरि कऽ



दुखनी घर पहुँचली। बच्चा सभकेँ पहिल बेर भरि पेट भोजन करेलथि। फेर अपन बेटीकेँ कहलखिन जे मौसीसँ तराजू लेने आ। सिखा देलखिन जे भलुनिया दऽ किछु नै कहियनि। दुखनीक बेटी जखन सुखनी लग तराजू मांगए गेल तँ सुखनीकेँ आशंका भेलनि। ओ तराजूक पलड़ाक नीचाँ गोंद लगा देलखिन। दुखनी पूरा सोना-असर्फी सभ तौल कऽ तराजू लौटबा देलखिन। एकटा असर्फी आ किछु सोना तराजूमे सटि कऽ सुखनी लग पहुँचि गेलनि। आब तँ सुखनी दौगल गेली बहिन लग। बड़ड निहौरा करै लगलखिन तँ दुखनी सभटा बता देलखिन।

लोभी सुखनी सेहो गेली बोनमे भलुनिया लग। फेर ओहिना भलुनिया देखि लेलकनि आ पुछलकनि तँ ई कहलखिन जे हम दुखनी छी। भलुनिया तुरत अन्दर बजा लेलकनि। सुखनी भीतर गेली आ सभसँ पहिने ठेलामे घर लऽ जाइ लेल समान पाती बान्हि लेलनि। फेर भलुनिया लग एली तँ ओकर महकैत शरीर नै बर्दाश्त भेलनि से बाजऽ लगली -“गए मौसी, गए मौसी। तोहर देह केहेन महकै छौ गए। घर केहेन घिना कऽ रखने छैं गए, एनामे केना रहल होइ छौ।”



एतेक सुनक छलै आकि भलुनियाकेँ तामस उठलै। ओ उठल आ सुखनीक कण्ठ मचोड़ि कऽ माइर कऽ खा गेल।

२. सिन्नुरक पुल

एकटा ब्राह्मण छलथि जे भीख मांगि कऽ अपन दिन काटैत छलथि। एक घर भीख मांगैत छलथि तैयो एक सेर चाउर होइत छलनि आ चालीस घर मांगैत छलथि तैयो एके सेर होइत छलनि। हुनकर संगे एक टा कुक्कुर आ एक टा बिलाड़ि सेहो रहैत छलनि। कुक्कुरमे आसपासक खतरा देखैक शक्ति छलै आ बिलाड़िमे भविष्य देखबाक दिव्यदृष्टि छलै।

एक दिन ब्राह्मण भीख लऽ कऽ लौटि रहल छलथि तँ बिलाड़ि कहलकनि जे मालिक अहाँकेँ काल्हि बड धन सम्पत्ति भेटत, ताबे कुक्कुड़ भौंकऽ लागल। मुड़ि कऽ देखलनि तँ एकटा नाग साँप कादोबला खत्तामे खसि पड़ल छलै। ब्राह्मण ओइ नागकेँ एकटा डारिक सहारे बाहर निकालि देलखिन। ओ नाग साधारण सर्प नै छल। ओ ब्राह्मणकेँ एकटा मणिबला अंगूठी देलकनि आ कहलकनि जे अहाँ भोरेमे नहाकऽ ठाँउ कऽ पूब मुँहेँ बैस कऽ ऐ अंगूठीक पूजा करब तकर बाद जे मांगब से भेटत। ब्राह्मणकेँ विश्वास तँ नै भेलनि तैयो ओ लऽ कऽ विदा भेला।

भोरे जखन ब्राह्मणक नींद खुजलनि तँ मोन भेलनि जे अंगूठीकेँ जाँचल जाए। सभटा बताएल तरीकासँ पूजा कऽ ओ अपना लेल एकटा सुन्दर महल आ खूब धन सम्पत्ति मंगलनि। सभटा पूरा भऽ गेलनि। तकर बादसँ ब्राह्मणक दिन बदलि गेलनि। जखन जे जरूरत से मांगि लैत छलथि। एक दिन किछु लोक ढिंढोरा पीट आएल जे जमीन्दार साहब कहलखिन हेँ जे हुनका अपन सुन्दरी बेटी लेल एकटा वर चाहियनि। जे जमींदारक घरसँ शुरू कए अपन घर तक सिन्नूर पुल बनाओत तकरासँ ओ अपन बेटीक बिआह करेथिन। गछलाक बाद नै बनेलासँ सजा भेटत। ई ब्राह्मण गछि लेलखिन। विदा भेला सेवक सभ संगे। कुक्कुर कहलकनि- अंगूठी हम अपन मुँहमे लऽ कऽ जाएब। ब्राह्मण मानि गेला। बिलाड़िकेँ किछु अनर्थ होइक आशंका भेलै से ओहो संगे लागि गेल।

रस्तामे एकटा पोखरिक कात सभ विश्राम लेल रूकला। कुक्कुरकेँ पोखरिमे अपन प्रतिबिम्ब देखेलै। ओ ओकरा अपन संगी बूझि उत्तेजित भऽ कऽ भौंकऽ लागल। एनामे अंगूठी पोखरिमे खसि पड़लै। आब ब्राह्मण बहुत दुखी भऽ गेला। सेवककेँ कहलखिन जे आब हमरासँ नै हएत पुल बनाओल। सेवक सभ हुनका कैद कऽ लेलकनि आ जमींदार लग विदा भेल। बिलाड़ि

ओतै रूकि गेल। कुक्कुर कारण पुछलकै तँ कहलक जे काल्हि एतए माछ मारल जाएत। अंगूठी एकटा माछ गीर गेल अछि। जखन मल्लाह सभ माछक भोंटि फेकत तँ हम ओइमे सँ अंगूठी निकालि लेब। कुक्कुर सेहो रूकि गेल।

भोरे सभटा ओहिना भेलै जेना बिलाड़ि कहने रहए। बिलाड़िकेँ इम्हर उम्हर घूमैत देखि मल्लाह सभटा माँछक भोंटि ओकरा दिस फेक देलकै। कुक्कुर बिलाड़ि दुनू सभटा भोंटि चिबाबए लागल। आखिर एकटामे अंगूठी भेटलै। दुनू अंगूठी लऽ कऽ जमीन्दारक कोठा दिस विदा भेल। ओतए ब्राह्मण कारावासमे बन्द छलथि। बिलाड़ि घुसिया कऽ गेल आ अंगूठी देलकनि। ब्राह्मणक जानमे जान एलनि। तुरन्त सेवक सबहक द्वारा जमींदारकेँ खबरि देलखिन। जमींदार सेवक सभकेँ बढ़ियासँ ठाँउ करै लेल कहलखिन। भोरे ब्राह्मण नहाकऽ पूब दिस बैस कऽ अंगूठीक पूजा केलनि आ फेर सिन्नुरक पुलक मांग केलखिन। पुल तुरत बनि गेल।

जमींदार प्रसन्न भेला आ अपन बेटीसँ ओइ ब्राह्मणक बिआह करा देलखिन। फेर ब्राह्मण अपन पत्नी आ कुक्कुर-बिलाड़ि लऽ कऽ सिन्नुरक पुले बाटे अपन महल आबि गेला आ खुशी-खुशी रहए लगला।

३. एक राजाक सात मेहरी

एकटा राजा रहथि जिनकर सात टा रानी रहनि। राजाक छोटकी रानी अपन सरल स्वभाव द्वारे सभसँ बेसी प्रिय रहनि जइ कारणे बाँकी छौओ रानीकेँ ओकरासँ बड़ड डाह होइ छलै। राजाकेँ एकोटा संतान नै छलनि तँए संतान प्राप्ति लेल ओ यज्ञ केलनि। साधु कहलकनि जे अहाँ आमक गाछमे बाम हाथे झट्टा फेकू आर दहिना हाथे आम लोकू, तखन ओइ आमकेँ सातो रानीकेँ कहियनु खाइ लेल। एना केलासँ अहाँकेँ शीघ्र पुत्र प्राप्ति हएत। राजा सएह केला आ लोकल आमकेँ बड़की रानीकेँ देलखिन आ कहलखिन जे सभ बाँटि कऽ खा लिअ।

बड़की रानी आमकेँ छोटकी रानीकेँ नै देलखिन आ सभटा आम छहो रानी मिलि कऽ खा गेली आ आँठी खोंइचा छाउरक ढेरपर फेक एली। जखन छोटकी रानीकेँ पता लगलनि तँ ओ छाउरक ढेरपर सँ आँठी खोंइचा आनि कऽ ओकरा धो कऽ चाटि गेली। समए बीतल, छहो रानीकेँ किछु नै भेलनि आ छोटकी रानी गर्भवती भऽ गेली। राजाकेँ ज्ञात भेलनि तँ ओ तुरन्त

सभ सेविका सभकेँ छोटकी रानीक बेसी धियान राखैक निर्देश दऽ देलखिन। ऐ सँ आन रानी सभ आरो तमसा गेली। जखन छोटकी रानीकेँ प्रसव भेलनि तँ बड़की रानी हुनकर नवजात बेटाकेँ छाउरक ढेरपर फेकवा देलखिन आ कान-खापैड़ देखा कऽ कहलखिन जे छोटकी रानीकेँ यएह संतान भेलनि। छोटकी रानी खूब कानए लगली। राजा सेहो बड्ड निराश भेला।

उम्हर एकटा सियारिन, जे राहड़िक खेतमे रहै छल, रोज राजमहलक पछुआड़मे छाउरक ढेरमे खाना ताकऽ आबै छल। ओ जखन ओइ बच्चाकेँ देखलक तँ सभ बात बूझि गेल। ओ सियारिन ओइ बच्चाकेँ अपन खोहिमे लऽ गेल आर अपन दूध पिया कऽ पालय लागल। राजमहलसँ चोरा चोरा ओकर पूरा पहिरन ओढ़न राजकुमार जकाँ राखने छल। एकटा सेविकाकेँ ई बात ज्ञात भऽ गेल। ओ बड़की रानीकेँ ई सभटा गप्प पाइक लोभमे कहि देलक। बड़की रानीकेँ भेलनि जे सियारकेँ मरबा देब तँ बच्चा फेर अनाथ भऽ जाएत आ कुनो जानवर ओकरा खा जेतै। ओ तुरन्त बेमार हुअए कऽ भग्गल कऽ लेलनि। राजा पुछलखिन जे की भेल तँ कहलखिन जे हम बड्ड बेमार छी। हमरा राहरिक खेतबला सियारक कलेजी तरि कऽ खाए पड़त नै तँ हम मरि जाएब। राजा तुरन्त अपन सैनिककेँ कहलखिन जे ओइ सियारकेँ माइर कऽ आनू। सैनिक सभ सियारकेँ माइर कऽ बड़की रानी लग हाजिर केलकनि, रानी फेर प्रसन्न आ स्वस्थ भऽ गेली।

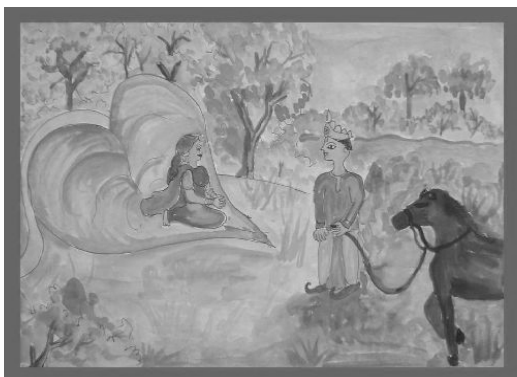
ओइ बच्चाक औरदा अखन बाँकी छलै। एकटा चिल्होड़ि जे नदीक कातक गाछपर घर बना कऽ रहैत छल से ओइ बच्चाकेँ रहड़िक खेतसँ उठा अपन घोंसलामे आनि कऽ पोषण करऽ लगलै। ओकर पहिरन देखि कऽ ओ चीन्हि गेलै जे ई राजकुमार अछि। ओइ घाटपर राजमहलक कपड़ा सभ धुआइत छल। चिल्होड़ि सेहो उम्हरसँ कपड़ाकेँ चोरा कऽ बच्चाकेँ पहिराबए लागल। ओ जगह-जगहसँ खाना लुझि कऽ बच्चाकेँ आनि कऽ दै छलै। आब बच्चा कनी ठेकनगर भऽ गेल छल, तँ चिल्होड़ि ओइ बच्चाकेँ एकटा फकड़ा सिखेलकै आ कहलकै जे ई गाबि-गाबि कऽ तूँ लोक सभसँ भीख मांग। बच्चा से करए लागल।

जखन ई गीत राजमंत्रीक कानमे गेलनि तँ ओ राजाकेँ कहलकनि जे राजा ई गीत तँ अहींक खिस्सा लागैत अछि। अहाँक छोटकी रानीकेँ बच्चा भेल रहनि। सभ कहलक कान-खापड़ भेलनि से लागैत अछि झूठ अछि। राजा बच्चाकेँ राजमहल बजेलनि। कहलखिन जे अपन गीत गाबै। बच्चा

गौलक- “एक राजा कऽ सात मेहरी, छोटकी मेहरी मोर महतरिया, रहड़िक खेतमे फेक देली, चिल्होरि पाओल, हम समचरिया, भिक्षा दे मैया।” राजाक माथा ठनकलनि। ओ सेविका सभकेँ डरा कऽ सभ बात ज्ञात केलनि। रहड़िक खेत तकक खिस्सा सेविका कहलकनि आ बाँकी ओइ चिल्होड़क सिखाएल गीतसँ बुझा गेलनि। बिना देर केने राजा छौहो रानीकेँ मृत्युदण्ड देलखिन आ चिल्होड़िकेँ इनाम देलखिन। अपने छोटकी रानी आर राजकुमार संगे महलमे खुशी खुशी रहए लगला।

४. पन्साया कुम्मरि

एक दिन एकटा राजा शिकारपर गेला। जाइत-जाइत ओ एक जगह पहुँचला जतए एकटा विशाल सुन्दर पानक पात छल। राजा जइने ओ पात तोड़ै लगला आकि ओ पात एकटा सुन्दर राजकुमारीमे बदलि गेल। राजा मोहित भऽ गेला। ओइ राजकुमारीक नाओं पन्साया कुम्मरि छल। राजा पन्साया कुम्मरिसँ बिआह कऽ हुनका अपन महलमे आनि लेलनि आ खुशीसँ रहए लगला।



किछु दिनक बाद राजा फेर शिकारपर गेला। फेर जाइत-जाइत ओ थाकि गेला तँ एकटा महल देखेलनि। राजा ओइ महलमे प्रवेश केलनि तँ ओकर वैभव देखि चकित भऽ गेला। अन्दर जाइते नौकर चाकर हुनकर सत्कारमे लागि गेल। राजा बहुत प्रसन्न भेला। तखन एकटा राजकुमारी एलखिन आ कहलखिन जे जँ अहाँकेँ हमर सत्कार नीक लागल तँ हमरासँ बिआह करू। राजा फँसि गेला। ओइ राजकुमारीक नाओं छल पहुनाइ।



राजा पहुनाइसँ बिआह कऽ ओइ महलमे रहय लगला।

समए बीतल। राजाक घर नै घुरलासँ पन्साया कुम्मरि चिन्तित रहए लगली। ओ सैनिक पठेली चारू दिस, राजाक खोजमे। सैनिक सभ खबरि आनि कऽ देलकनि। पन्साया कुम्मरि एकटा पत्र राजाक नामे पठेलखिन जइमे राजासँ घर लौटक आग्रह केने रहथि। पत्र महल तँ पहुँचल मुदा राजासँ पहिने पहुनाइक हाथ लागल। पहुनाइ जबाब पठौलखिऩ-

“जरथु मरथु पन्साया कुम्मऱि दय बसहु पहुनाइ।

जइ देस रहत पन्साया कुम्मरि तइ देस पिया घुरि नै जाय।। ”

जबाब पढ़ि पन्साया कुम्मरि तमसा गेली। अपन सेवककेँ कहलखिन- हमरा एक पेटी मूस आ एक पेटी झिंगुर दिअ। जुल्हासँ काँच रंगमे रंगल खूब चटकदार साड़ी मंगेली। चटकदार साड़ी पहिन पेटी लऽ विदा भेली पहुनाइक महल दिस। पहुनाइक महल लग रूकि कऽ नाचए लगली। पहुनाइक नजरि हुनकर साड़ीपर गेलनि। राजासँ जिद्द करए लगली जे हमरा वएह साड़ी चाही। राजा बड़ड बुझेलखिन जे हम अहूसँ नीक आनि देब मुदा ओ जिद्दपर अड़ि गेली। हारि कऽ पन्साया कुम्मरिकेँ बजाओल गेल। पन्साया कुम्मरि राजासँ कहलखिऩ- हम एकेटा शर्तपर अपन साड़ी देब। काल्हि भोरमे अहाँ हम्मर साड़ी जेहेन अखन ऐ तहिना लौटाएब। नै तँ अहाँकेँ हमरा संगे चलए पड़त।” राजा शर्त मानि गेलखिन।



रातिमे जखन पहुनाइ ओ साड़ी पहिन कऽ सुतली तँ पन्साया कुम्मरि हुनकर कोठलीक खिड़की बाटे भरि पेटी मूस आ भरि पेटी झिंगुर अन्दर दऽ देलखिन। राति भरिमे मूस साड़ीकेँ जतए ततए काटि देलकनि आ झिंगुर सभटा रंग चाटि गेलनि। भोरे पहुनाइ जखन उठली तँ साड़ीक दुर्दशा देखि कानए लगली। मुदा राजा एकटा नै सुनलखिन। अपन वचनबद्धताक कारण पन्साया कुम्मरि संगे ओ विदा भऽ गेला।

५. सुहान बोन

एकटा राजाकेँ सात टा रानी रहनि। सभ मिलि-जुलि कऽ नीकसँ रहैत रहथि। किछु दिनका बाद छोटकी रानी गर्भवती भेलखिन। राजा खूब प्रसन्न भेला। एक दिन ओ शिकारपर गेला। जाइत-जाइत ओ सुहान बोन पहुँच गेला जतए एकटा राक्षसीक राज रहए। राक्षसीक एकटा बेटी रहै जकर नाओं सुहान रहए। राक्षसी जखन राजाकेँ देखलक तँ अपन बेटीकेँ खूब सुन्दर रूप दऽ कऽ राजाक रस्तामे बैसा देलक। राजा ओकर रूपपर मोहित भऽ ओकरासँ बिआह कऽ लेला। आब सुहान सेहो सातो रानी संगे महलमे रहए लागल। अपन राक्षसी प्रवृतिक अनुसार ओ सभकेँ खूब तंग करए लागल। राजाकेँ जखन अकर आभास भेलनि ओ सुहानपर सँ धियान हटाबए लगला। सुहानकेँ से बर्दाश्त नै भेलै आ ओ सातो रानीक आँखि निकालि कऽ जंगल दिस बैला देलक। सातो रानीक चौदह टा आँखिकेँ ओ अपन माएकेँ दऽ देलक। ओकर माए ओइकेँ सीकपर टांगि कऽ राखि लेलक। जखन राजा पुछलखिन सुहानकेँ जे बाँकी रानी सभ कतए छथि तँ सुहान कहलकनि जे ओ सभ महल छोड़ि कऽ भागि गेली। राजाकेँ बड़ड क्षोभ भेलनि।

एम्हर सातो रानी फल-फूल खा कऽ गाछक नीचाँ जीवन काटै लगली। एहनेमे छोटकी रानीकेँ बेटा भेलनि। दिन बितैत गेल आ ओ बेटा पैघ भेल। एक दिन ओ जंगलसँ जाड़नि जमा कऽ शहरमे बेचलक आ जे पाइ भेलै तइसँ सभ लेल भोजन कपड़ा आदि किनने आएल। अतेक दिनका बाद अन्न खा कऽ सभ माए ओइ बच्चाकेँ खूब आशीर्वाद देलखिन। धीरे-धीरे ओ बच्चा एकटा झोपड़ी सेहो बना लेलक। अहिना एक दिन ओ बच्चा जाड़ैन ताकैत रहए तँ ओकरा फूलक ढेर देखेलइ। लग गेल तँ ओ एकटा पूजाक स्थल रहए। ओ तुरन्त सभ निर्मालकेँ बहा कऽ जगहकेँ नीप पोइछ कऽ ठीक कऽ लेलक आ नुका कऽ ताकऽ लागल जे एतऽ के पूजा करैत अछि? कनिक कालक बाद एकटा साधुबाबा एला। जगह साफ देखि कऽ बड खुश भेला। ओ आवाज देला जे जे कियो ई केलौंहँ से सामने आउ। बच्चा सामने गेल तँ साधु बाबा कहलखिन जे अहाँ वरदान मांगू तँ बच्चा कहलकनि जे हमर माए सभकेँ सभटा पहिनेबला सुख, आँखिक रौशनी, राजमहल आदि भेट जाए। साधु कहलखिन जे सभटा भेटत मुदा अहाँकेँ अपने प्रयास करए पड़त।



साधु अपन दिव्य दृष्टिसँ देखि कऽ सुहानक माइक घरक रस्ता पता केलनि। फेर एकटा उड़ैबला घोड़ा बनेला। तखन कहलखिऩ "अहाँ सुहान

बोनमे सुहानक नैहर जाउ। घोड़ाकेँ बाड़ीमे नुका कऽ ठाढ़ कऽ लेब आ अपने कौआ बनि कऽ चारपर बैस कऽ ई फकरा गाएब 'बुढ़िया मैया नाति सुहान, मैया पूत लवा खाँऊ खाँऊ खाँऊ।' ई सुनि कऽ ओ राक्षसनी बुझत जे अहाँ ओकर नाति आ सुहानक बेटा छी। अहाँकेँ असौरापर बैसा कऽ कहत जे माछी माइर-माइर कऽ फाँकू। हम रोपणी आ कटनी केने आबै छी। ओ बारहो मास धान रोपै छै आ बारहो मास काटै छै। जखने ओ खेत दिस जाएत अहाँ मनुखक रूप धऽ सीकपर सँ आँखिक कोहा उठा कऽ घोड़ापर चढ़ि भागि जाएब।''

ओ बच्चा सभटा तहिना केलक जेना साधु बाबा सिखेने रहथिन। मुदा जखन ओ भागै छल तँ सुहानक माए पाछाँ-पाछाँ भागए लगलै आ कहए लगलै ''रे मुड़ि घुरि ताक, रे मुड़ि घुरि ताक।'' ओ बच्चा जइने पाछाँ तकलक की बच्चा आ घोड़ा जरि कऽ भष्म भऽ गेल। सुहानक माए फेरसँ सभटा आँखि सीकपर टांगि लेलक। साधु बाबा कहनाइ बिसरि गेल रहथिन जे पाछाँ घुरि कऽ नै ताकब।

समए बीतल। आन्हर माए सभकेँ भेलनि जे बच्चाकेँ कुनो जानवर खा गेल। साधु बाबाकेँ सेहो कनी दिन बाद धियान एलनि जे ओइ बच्चाक हाल बुझिऐ। जइने दिव्य दृष्टि दौगेला तँए अपन गलतीक ज्ञान भेलनि। तुरन्त अमृत छीट कऽ बच्चा आ घोड़ाकेँ जियेला। एकटा काज आर केला जे सुहानक माएकेँ ऐ घटनाक स्मृति ओ हरि लेलखिन। फेरसँ बच्चा ओहिना सुहानक माए लग गेल, सभटा ओहिना भेलै मुदा ऐबेर बच्चा पाछाँ घुरि कऽ नै ताकलक। ऐबेर ओ सुरक्षित आँखि लऽ कऽ आबि गेल छल। आब सभटा आँखि ओ माए सभकेँ लगा देलक। सातो रानीकेँ सूझए लगलनि। सभ बड़ड प्रसन्न भेली। सभ साधु बाबाकेँ खूब धन्यवाद देलखिन आ बेटाकेँ खूब आशीष।

साधु सहित सभ कियो मिलि कऽ राजमहल गेला। राजाकेँ सभ बात कहलखिन। राजा सुहान आ ओकर माएकेँ मृत्युदण्ड देलखिन आ बाँकी सभसँ माफी मंगला। फेर सभ कियो संगे खुशीसँ रहए लगला।